“मीठे सेन्सीबुल बच्चे - सदा याद रखो कि हम अविनाशी आत्मा हैं, हमें अब बाप के साथ पहले तबके (फ्लोर) में जाना है"

आवागमन से कभी छूटना नहीं है। इस समय करोड़ों मनुष्य हैं और भी आते रहेंगे, पुनर्जन्म लेते रहेंगे। फिर फर्स्ट फ्लोर खाली होगा। मूलवतन है

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 4

3rd / ground floor   Point to ponder very deeply   to understand the structure of universe

15-04-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

फर्स्ट फ्लोर, सूक्ष्मवतन है सेकण्ड फ्लोर। यह है थर्ड फ्लोर अथवा इनको ग्राउण्ड फ्लोर कहो। दूसरा कोई फ्लोर है नहीं। वह समझते हैं स्टार्स में भी दुनिया है। ऐसे है नहीं। फर्स्ट फ्लोर में आत्मायें रहती हैं। बाकी मनुष्यों के लिए तो यह दुनिया है।

तुम बेहद के वैरागी बच्चे हो, तुम्हें इस पुरानी दुनिया में रहते हुए भी इन आंखों से सब कुछ

प्रश्नः- कौन सी मेहनत तुम हर एक बच्चे को अवश्य करनी है?

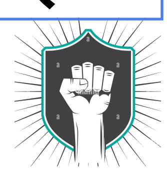

उत्तर:-बाबा तुम्हें जो इतनी नॉलेज देते हैं उसे अपनी दिल से लगाते रहो। अन्दर ही अन्दर उसको मनन कर हज़म करो, जिससे शक्ति मिलेगी। यह मेहनत अवश्य हर एक को करनी चाहिए। जो ऐसी गुप्त मेहनत करते हैं वह सदा हर्षित रहते हैं, उन्हें नशा रहता है कि हमें पढ़ाने वाला कौन है! हम किसके सामने बैठे हैं!

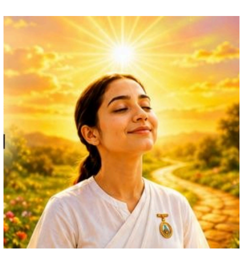

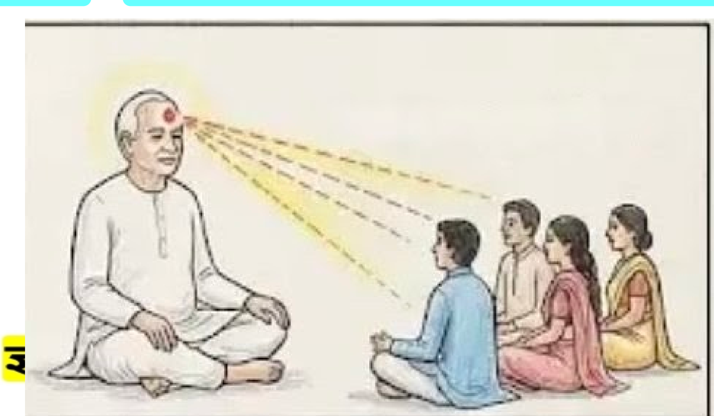

Points: ज्ञ... M.imp.

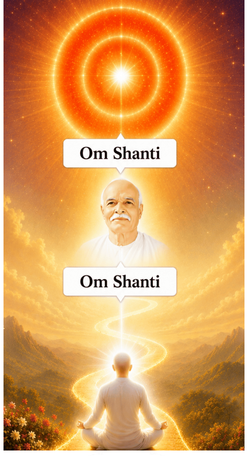

12-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। यह किसने कहा? दो बार कहते हैं ओम् शान्ति, ओम् शान्ति। एक शिवबाबा ने कहा, एक ब्रह्मा बाबा ने। यह बापदादा इकट्ठे हैं। तो दोनों को बोलना पड़े ओम् शान्ति, ओम् शान्ति। अब पहले किसने कहा? बाद में किसने कहा? पहले शिवबाबा ने कहा ओम् शान्ति। मैं शान्ति का सागर हूँ, पीछे किसने कहा? दादा की आत्मा ने कहा। बच्चों को याद दिलाते हैं ओम् शान्ति, मैं तो सदैव देही-अभिमानी हूँ, कभी देह-अभिमान में नहीं आता हूँ। एक ही बाप है जो सदैव देही-अभिमानी रहते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर ऐसे नहीं कहेंगे। तुम जानते हो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी सूक्ष्म रूप है। तो ओम् शान्ति करने वाला एक शिवबाबा है, जिसको कोई शरीर नहीं। बाप तुमको अच्छी रीति समझाते हैं और कहते हैं मैं एक ही बार आता हूँ, मैं सदैव देही-अभिमानी हूँ। मैं पुनर्जन्म में नहीं आता इसलिए मेरी महिमा ही न्यारी है। मुझे कहते हैं निराकार परमपिता परमात्मा। भक्ति मार्ग में भी शिव के लिए कहेंगे निराकार परमपिता परमात्मा है। निराकार की

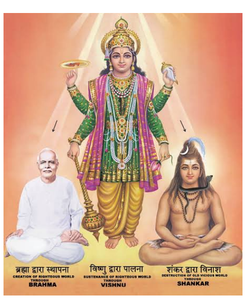

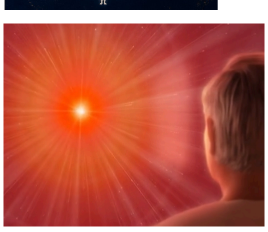
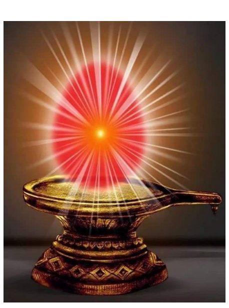

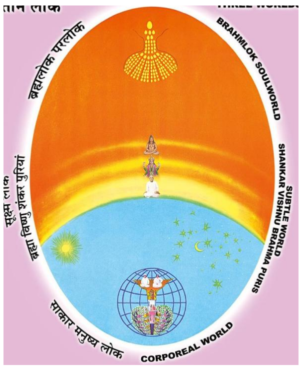

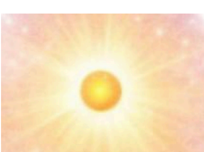

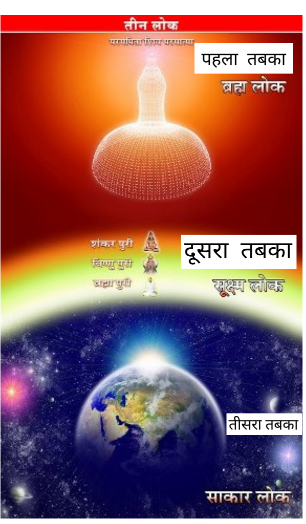

पूजा होती है। वह कभी देह में नहीं आते हैं अर्थात् देह-अभिमानी नहीं बनते हैं। अच्छा फिर उसके नीचे आओ सूक्ष्मवतन में, जहाँ ब्रह्मा-विष्णु-शंकर रहते हैं। शिव का नाम रूप तो देखने में नहीं आता है। चित्र बनते हैं लेकिन वह है निराकार, वह कभी साकार बनते ही नहीं। पूजा भी निराकार की ही होती है। बच्चों की बुद्धि में सारा ज्ञान रहता है। भक्ति तो की है। चित्र बच्चों ने देखा है, तुम जानते हो सतयुग-त्रेता में न चित्रों की भक्ति होती, न विचित्र की। बुद्धि में आता है परमपिता परमात्मा विचित्र है। उनका न सूक्ष्म, न स्थूल चित्र है। उनकी महिमा गाई जाती है, दु:ख हर्ता, सुख कर्ता, पतित-पावन। तुम और किसी के चित्र को पतित-पावन नहीं कहेंगे। कोई भी मनुष्य नहीं जिनकी बुद्धि में यह बात हो। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर हैं सूक्ष्मवतनवासी। पहला तबका फिर दूसरा तबका। ऊंच ते ऊंच मूलवतन, उस तबके में रहने वाला है परमपिता परमात्मा। सेकण्ड नम्बर तबके में सूक्ष्म शरीर वाले हैं। थर्ड तबके में स्थूल शरीरधारी हैं, इसमें मूँझना नहीं है। यह बातें सिवाए परमपिता परमात्मा के

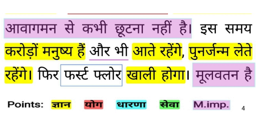
आवागमन से कभी छूटना नहीं है। इस समय करोड़ों मनुष्य हैं और भी आते रहेंगे, पुनर्जन्म लेते रहेंगे। फिर फर्स्ट फ्लोर खाली होगा। मूलवतन है

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 4

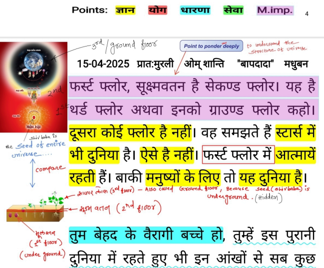

15-04-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
फर्स्ट फ्लोर, सूक्ष्मवतन है सेकण्ड फ्लोर। यह है थर्ड फ्लोर अथवा इनको ग्राउण्ड फ्लोर कहो। दूसरा कोई फ्लोर है नहीं। वह समझते हैं स्टार्स में भी दुनिया है। ऐसे है नहीं। फर्स्ट फ्लोर में आत्मायें रहती हैं। बाकी मनुष्यों के लिए तो यह दुनिया है।
तुम बेहद के वैरागी बच्चे हो, तुम्हें इस पुरानी दुनिया में रहते हुए भी इन आंखों से सब कुछ

Exclusive Authority of Shiv baba

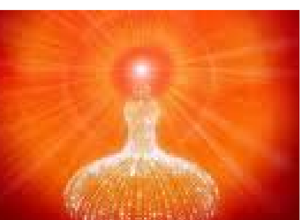

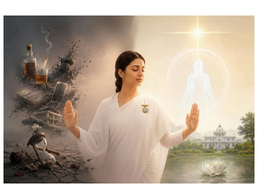

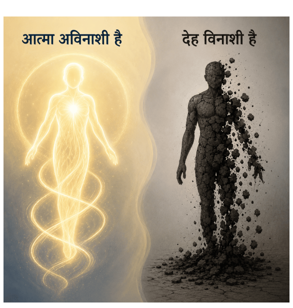

कोई समझा नहीं सकता है। ऊपर में सृष्टि है आत्माओं की। उसको कहा जाता है निराकारी दुनिया, हम सब आत्माओं की दुनिया, इनकारपोरियल वर्ल्ड। फिर हम आत्मायें कारपोरियल वर्ल्ड में आती हैं। वहाँ हैं आत्मायें, यहाँ हैं जीव आत्मायें। यह बुद्धि में रहना चाहिए। बरोबर हम निराकारी बाबा के बच्चे हैं। हम भी पहले निराकार बाप के पास रहते थे। निराकारी दुनिया में ही आत्मायें रहती हैं। जो अभी तक पार्ट बजाने लिए आते रहते हैं - साकार में। वह हो गया निराकार बाप का वतन। हम आत्मा हैं, यह नशा होना चाहिए। अविनाशी चीज़ का नशा रहना चाहिए। विनाशी चीज़ का थोड़ेही होना चाहिए। देह के नशे वाले को देह-अभिमानी कहा जाता है। देह-अभिमानी अच्छे वा आत्म-अभिमानी अच्छे? सेन्सीबुल कौन? आत्म-अभिमानी। आत्मा ही अविनाशी है, देह तो विनाशी है। आत्मा कहती है हम 84 देह लेते हैं। हम आत्मा परमधाम में बाप के साथ रहने वाली हैं। वहाँ से आते हैं यहाँ पार्ट बजाने। आत्मा कहती है ओ बाबा। साकारी सृष्टि

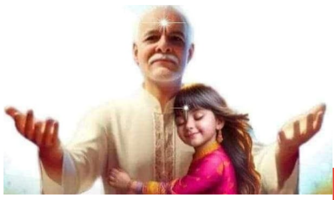

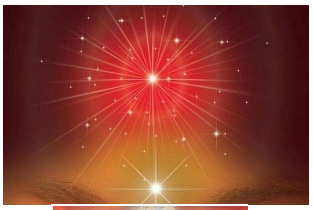

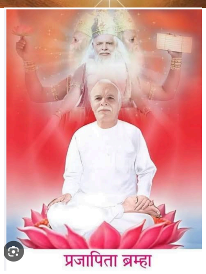

में हैं साकारी बाबा। निराकारी सृष्टि में निराकार बाबा। यह तो बिल्कुल सहज बात है। अब ब्रह्मा को कहते हैं प्रजापिता ब्रह्मा। सो तो यहाँ ठहरा ना। वहाँ हम आत्मायें सब एक बाप के बच्चे ब्रदर्स हैं। बाप शिव के साथ रहने वाले हैं। परमात्मा का नाम है शिव। आत्मा का नाम है सालिग्राम। आत्मा का भी रचयिता चाहिए ना। दिल में हमेशा बातें करते रहो। जो ज्ञान मिला है वह अपने दिल से लगाने के लिए मेहनत करनी है। आत्मा ही विचार करती है। पहले-पहले तो यह निश्चय करो कि हम आत्मा बाप के साथ रहने वाले हैं। हम उनके बच्चे हैं तो जरूर वर्सा मिलना चाहिए। यह भी तुम जानते हो कि यह जो आत्माओं का झाड़ है उनके पहले जरूर बीज होता है। जैसे सिजरा बनाते हैं। बड़ा बाप फिर उनसे 2-4 बच्चे निकले, फिर उनसे और निकलते। एक दो वृद्धि को पाते-पाते झाड़ बड़ा हो जाता है। बिरादरी का नक्शा होता है। फलाने से फलाना निकला....।

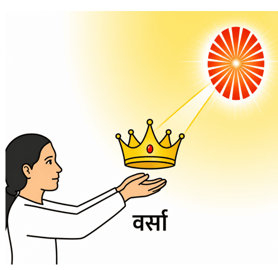

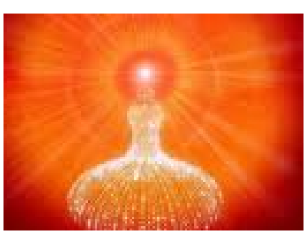

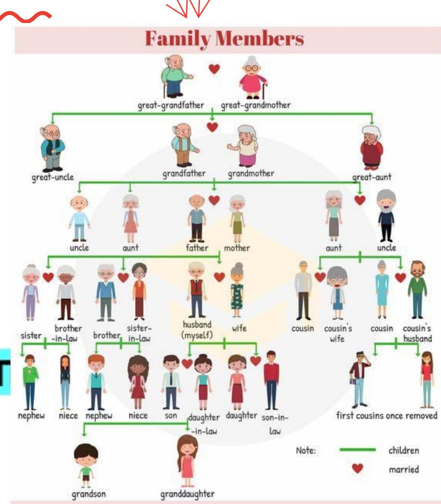

Points: ज्ञान योग धारणा

12-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

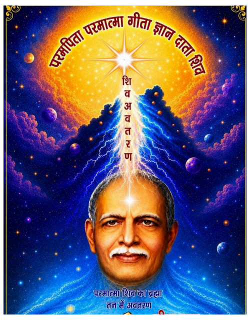

तुम बच्चे जानते हो मूलवतन में सभी आत्मायें रहती हैं। उनका भी चित्र है। ऊंच ते ऊंच है बाप। तुम बच्चों की बुद्धि में है - बाबा इस शरीर में आया हुआ है। रूहानी बाप इनमें आकर रूहों को पढ़ाते हैं। सूक्ष्मवतन में तो नहीं पढ़ायेंगे। सतयुग में तो यह नॉलेज किसको भी रहती नहीं। बाप ही इस संगमयुग पर आकर यह नॉलेज देते हैं। इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ की नॉलेज कोई को है नहीं। कल्प की आयु ही बहुत बड़ी लिख दी है। अभी बाप तुमको समझाते हैं - बच्चे अभी तुमको फिर घर चलना है। वह है आत्माओं का घर। बाप और बच्चे रहते हैं, सब ब्रदर्स हैं। ब्रदर और सिस्टर तब कहा जाता है जब यहाँ शरीर धारण करते हैं। हम आत्मायें सब भाई-भाई हैं। भाई का जरूर बाप भी होगा ना। वह है परमपिता परमात्मा। सभी आत्मायें शरीर में रहते हुए उनको याद करती हैं। सतयुग-त्रेता में कोई याद नहीं करते हैं। पतित दुनिया में सभी उनको याद करते हैं क्योंकि सब रावण की जेल में हैं। सीता पुकारती थी हे राम। बाप समझाते हैं राम कोई त्रेता वाला याद नहीं

Exclusive Authority of Shiv baba

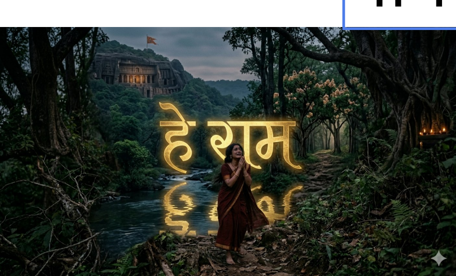

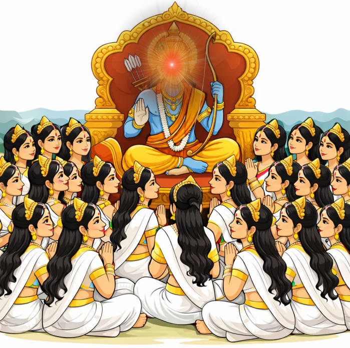

Exclusive Authority of Shiv baba

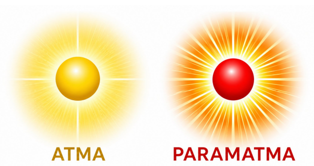

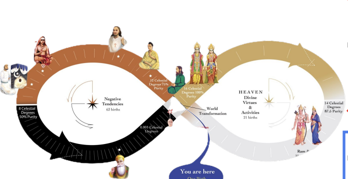

आता है। राम परमपिता परमात्मा को समझ याद करते रहते हैं। आत्मा पुकारती है। अभी तुम जानते हो आधाकल्प फिर हम किसको पुकारेंगे नहीं क्योंकि सुखधाम में रहेंगे। इस समय बाप ही समझाते हैं, दूसरा कोई जानते ही नहीं। वह तो कह देते हैं कि आत्मा सो परमात्मा, आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती है। बाप समझाते हैं, आत्मा तो अविनाशी है। एक भी आत्मा का विनाश नहीं हो सकता। जैसे बाप अविनाशी वैसे आत्मा भी अविनाशी है। यहाँ आत्मा पतित तमोप्रधान बनती है, फिर बाप सतोप्रधान पवित्र बनाते हैं। As Certain as Death सारी दुनिया को तमोप्रधान बनना ही है। फिर सतोप्रधान बनना है। पतित दुनिया को पावन बनाने बाप को आना पड़ता है। उनको कहते ही हैं गॉड फादर। बाप भी अविनाशी है, हम आत्मायें भी अविनाशी हैं, यह ड्रामा भी अविनाशी है। तुम बच्चे जानते हो कि यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है। इन चारों युगों में हमारा पार्ट चलता है। हम सूर्यवंशी फिर चन्द्रवंशी बनते हैं। चन्द्रवंशी जैसे सेकण्ड ग्रेड में आ जाते हैं। 14

कला वालों को सूर्यवंशी नहीं कह सकते। वास्तव में देवी-देवता भी उन्हों को नहीं कह सकते। देवी-देवता सम्पूर्ण निर्विकारी, 16 कला सम्पूर्ण को कहा जाता है। राम को 14 कला सम्पन्न कहेंगे। तुम्हारे ही 84 जन्मों का हिसाब समझाया जाता है। नई चीज़ फिर पुरानी होती है तो वह मज़ा नहीं रहता है। पहले सम्पूर्ण पवित्र रहते हैं फिर थोड़े वर्ष पास होंगे तो थोड़ा पुराना कहेंगे। मकान का भी मिसाल दिया जाता है। ऐसे हर चीज़ होती है।

Infinite

Subtle Point to understand

यह दुनिया भी एक बड़ा माण्डवा है। यह आकाश तत्व बहुत बड़ा है, इसका कोई अन्त नहीं। इनकी एण्ड कहाँ है, वह निकाल नहीं सकते। चलते जाओ, एण्ड हो नहीं सकती। ब्रह्म महतत्व की भी कोई एण्ड हो नहीं सकती। यूँ साइन्स वाले कितनी कोशिश करते हैं एण्ड देखने की लेकिन जा नहीं सकते, अन्त पा नहीं सकते। ब्रह्म तत्व बहुत बड़ा, बेअन्त है। हम आत्मायें बहुत थोड़ी जगह में रहती हैं। यहाँ बिल्डिंग आदि कितनी बड़ी-बड़ी बनाते हैं। स्पेश धरती की बहुत बड़ी है। खेती आदि भी तो चाहिए ना। वहाँ तो सिर्फ आत्मायें रहती हैं। आत्मा

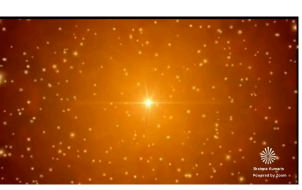

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

12-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

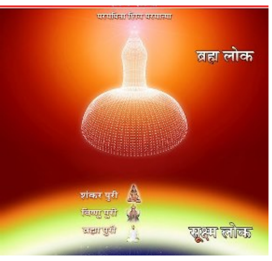

शरीर बिगर कैसे खायेगी? वहाँ तो अभोक्ता है। खाने वा भोगने आदि की कोई चीज़ होती नहीं। बाप समझाते हैं यह ज्ञान तुम बच्चों को एक ही बार मिलता है। फिर कल्प बाद तुम बच्चों को दिया जाता है। तो यह नशा होना चाहिए। हम देवता धर्म वाले थे। तुम कहते हो बाबा आज से 5 हज़ार वर्ष पहले हम आपके पास आये थे - शूद्र से ब्राह्मण बनने। अब फिर हम आपके पास आये हैं। वह निराकार होने कारण तुम कहेंगे दादा पास आये हैं। बाप ने इसमें प्रवेश किया है। बाप कहते हैं - जैसे तुम आरगन्स ले पार्ट बजाते हो वैसे ही मैं भी आरगन्स का आधार लेता हूँ। नहीं तो मैं पार्ट कैसे बजाऊं? शिव जयन्ती भी मनाते हैं। शिव तो निराकार है। उनकी जयन्ती कैसे हुई? मनुष्य तो एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। बाप कहते हैं - मैं कैसे आकर तुम बच्चों को राजयोग सिखाऊं। मनुष्य से देवता बनाने के लिए राजयोग बाप ही आकर सिखाते हैं। मुझे ही पतित-पावन, ज्ञान का सागर कहते हैं। मुझे झाड़ के आदि-मध्य-अन्त का मालूम है।

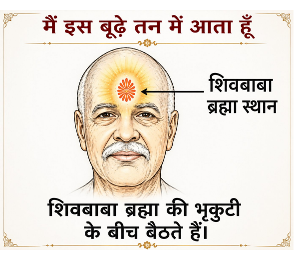

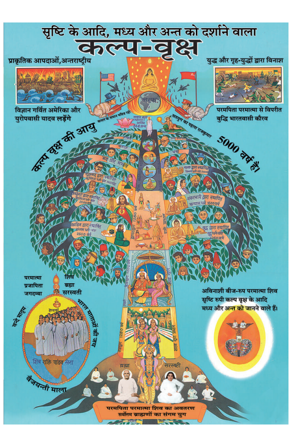

Exclusive Authority of Shiv baba

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

12-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

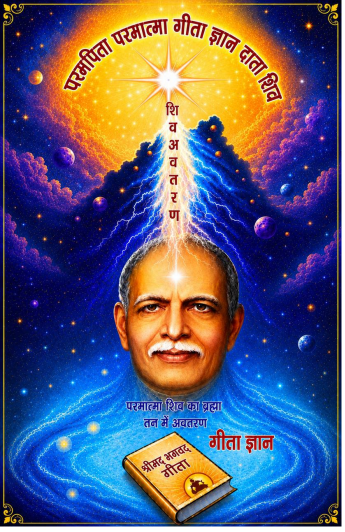

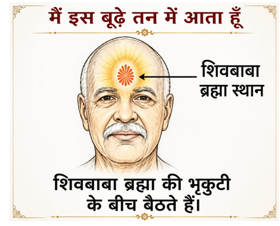

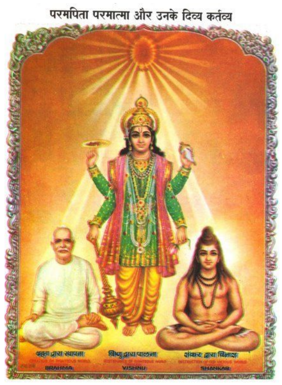

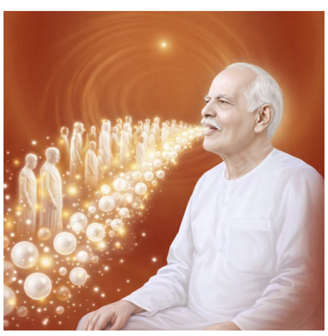

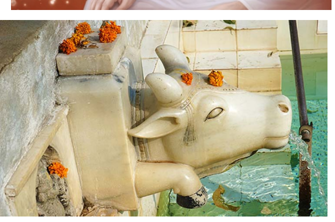

तुम बच्चे समझते हो बाबा इसमें प्रवेश कर हमको सब नॉलेज समझाते हैं। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के पार्ट को भी समझना चाहिए। बाप को तो समझा है कि वह पतित-पावन है। हर एक की महिमा अलग-अलग, ड्यूटी अलग-अलग होती है। प्रेजीडेन्ट, प्राइम मिनिस्टर आदि बनते हैं। आत्मा कहती है यह मेरा शरीर है। मैं प्राइम मिनिस्टर हूँ। आत्मा शरीर के साथ न हो तो बोल न सके। शिवबाबा भी है निराकार। उनको भी बोलने के लिए कर्मेन्द्रियों का आधार लेना पड़ता है, इसलिए दिखाते हैं - मुख से गंगा निकली। अब शिव तो है बिन्दी। उनको मुख कहाँ से आया? तो इसमें आकर बैठते हैं, उससे ज्ञान गंगा बहाते हैं। बाप को ही सब याद करते हैं - हे पतित-पावन आओ। हमको इस दु:ख से छुड़ाओ। वही बड़े ते बड़ा सर्जन है। उसमें ही पतितों को पावन बनाने का ज्ञान है। सर्व पतितों को पावन बनाने वाला एक सर्जन है। सतयुग में सब निरोगी होते हैं। यह लक्ष्मी-नारायण सतयुग के

Multi Trillion dollar Question..

12-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मालिक हैं। इसको ऐसे कर्म किसने सिखाये जो ऐसे निरोगी बनें। बाप ही आकर श्रेष्ठ कर्म सिखलाते हैं। यहाँ तो कर्म ही कूटते रहते हैं। सतयुग में तो ऐसे नहीं कहेंगे कि कर्म ऐसे हैं। वहाँ कोई दु:ख, रोग होता नहीं। यहाँ तो एक दो को दु:ख ही देते रहते हैं। सतयुग-त्रेता में दु:ख की बात होती नहीं, जो कहा जाए कि यह कर्मों का भोग है।

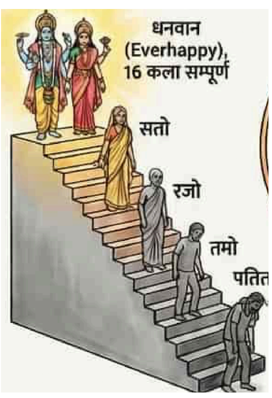

कर्म-अकर्म-विकर्म का अर्थ कोई समझ ही नहीं सकते हैं। तुम जानते हो हर एक चीज़ पहले सतोप्रधान फिर सतो रजो तमो बनती है। सतयुग में 5 तत्व भी सतोप्रधान रहते हैं। हमारे शरीर भी सतोप्रधान प्रकृति के होते हैं फिर आत्मा की दो कला कम होने से शरीर भी ऐसे बनते हैं। सृष्टि की भी दो कला कम हो जाती हैं। यह सब बाप ही बैठ समझाते हैं, दूसरा कोई समझा न सके। अच्छा!

Exclusive Authority of Shiv baba

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अभी से ही बाप की श्रीमत पर ऐसे श्रेष्ठ कर्म करने हैं, जो फिर कभी कर्म कूटने न पड़े अर्थात् कर्मों की सज़ायें न खानी पड़े।

m.m.m....imp.

2) किसी भी विनाशी चीज़ का नशा नहीं रखना है। यह देह भी विनाशी है, इसका भी नशा नहीं रखना है, सेन्सीबुल बनना है।

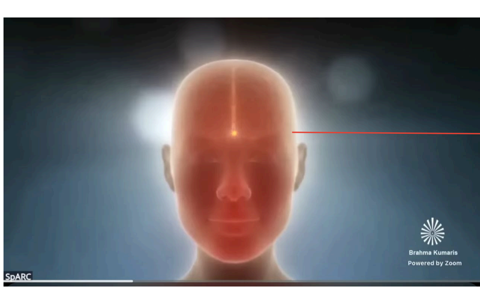

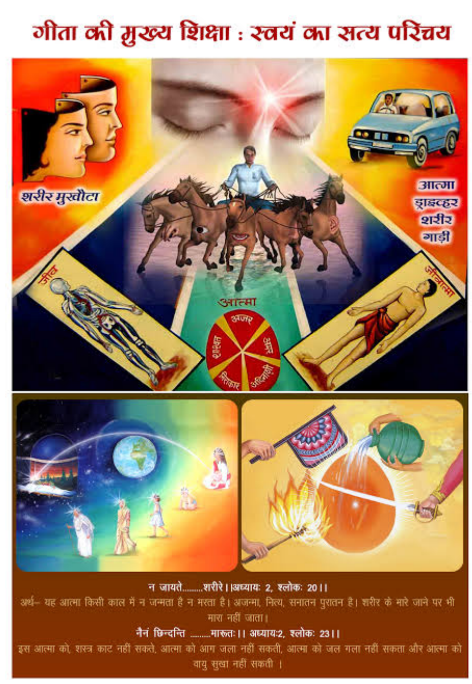

12-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- इस पुरानी दुनिया को विदेश समझ इससे उपराम रहने वाले स्वदेशी भव

जैसे कई लोग विदेश की चीज़ों को टच भी नहीं करते हैं, समझते हैं अपने देश की चीज़ का प्रयोग करें।

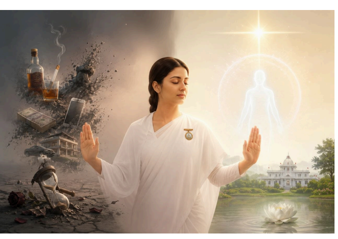

ऐसे आप लोगों के लिए, यह पुरानी दुनिया ही विदेश है, इससे उपराम रहो अर्थात् पुरानी दुनिया की जो चीज़े हैं, स्वभाव-संस्कार हैं उनकी तरफ जरा भी आकर्षित न हो।

स्वदेशी बनो अर्थात् आत्मिक रूप में अपने ऊंचे देश परमधाम और इस ईश्वरीय परिवार के हिसाब से मधुबन देश के निवासी समझ, इसके नशे में रहो।

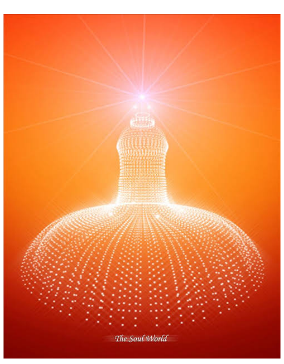

स्लोगन:-झमेलों में फंसने के बजाए सदा मिलन मेले में रहो।

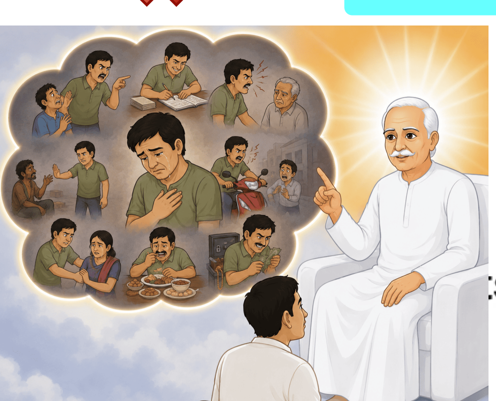

:s: ज्ञान यो

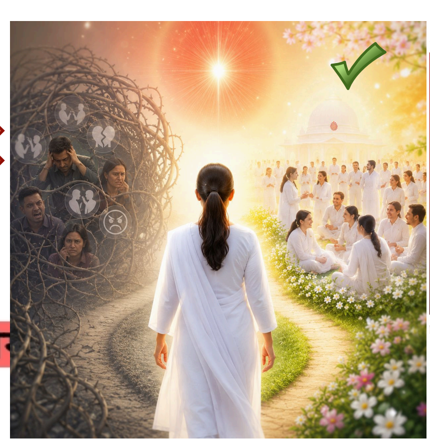

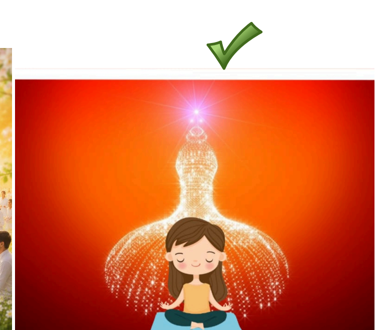

M.imp.

12-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

सदा हर्षित रहने के लिए

अपनी नेचर को सरल बनाओ, सहनशील बनो।

Note it down

Base of ज्ञान मार्ग

होलीहंस की विशेषता - सरल-चित, सरल वाणी, सरल वृत्ति, सरल दृष्टि।

बापदादा को सबसे प्रिय, सबसे समीप साफ दिल वाले प्यारे हैं।

साफ दिल सदा बापदादा के दिलतख्त नशीन, सर्व श्रेष्ठ संकल्प पूर्ण होने के कारण वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में, सम्बन्ध-सम्पर्क में सरल और स्पष्ट एक समान दिखाई देते हैं।

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans May 26 → Click

All अव्यक्त इशारे May 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

ओम शांति ,
1 जून से टीम हाइलाइटेड मुरली ने एक नई पहल शुरू की है इस Mind map के रूप में।

इस नई पहल का उद्देश्य यह है कि
आप दिन में कर्म करते हुए या ट्रैवलिंग करते हुए कहीं पर भी, थोड़े से ही समय में ज्ञान,योग,धारणा और सेवा जो हमारे चार मुख्य सब्जेक्ट है उसके main Points को Quickly Revise कर सके और उसका मंथन करते हुए बाबा की याद में एवं स्वदर्शन चक्र फिराने में डूबे रह सके जिससे कि व्यर्थ के आने की कोई मार्जिन ही न रहे।

मीठे बापदादा हमसे चाहते है कि "मेरा हर एक बच्चा व्यर्थ से मुक्त बन जाए।" और व्यर्थ मिटाने का सबसे सरल साधन है निरन्तर समर्थन चिन्तन। और मुरली है सर्व समर्थ साधन - क्योंकि मुरली है सर्व शक्तिमान शिवबाबा का मन। तो मुरली के मंथन में व्यस्त रहना अर्थात उस Supreme powerhouse से अपने मन की तार को जोड़ना।

चूं की यह एकदम नई सेवा है तो आप अपना feedback अवश्य भेजें ताकि Team इस सेवा का एनालिसिस कर के सेवा में improvement कर सके एवं इस सेवा की दिशा को भी जान सके (सेवा जिस उद्देश से शुरू की है वो सार्थक हो रहा है कि नहीं)।

आपका Feedback इस गूगल फॉर्म में submit कीजिए।

Click

इस mind map में,
मुरली की Main Body को ही ध्यान में लिया गया है।
अर्थात सार,प्रश्नोत्तर,धारणा, वरदान, स्लोगन ,अव्यक्त इशारों को include नहीं किया है।

SM 12.02.2026

- **ज्ञान**
  - **आत्मा**
    - ऊपर में सृष्टि है आत्माओं की।
      - उसको कहा जाता है निराकारी दुनिया,
    - हम सब आत्माओं की दुनिया, इनकारपोरियल वर्ल्ड।
    - फिर हम आत्मायें कारपोरियल वर्ल्ड में आती हैं।
    - बरोबर हम निराकारी बाबा के बच्चे हैं। हम भी पहले निराकार बाप के पास रहते थे।
    - निराकारी दुनिया में ही आत्मायें रहती हैं।
    - आत्मा कहती है हम 84 देह लेते हैं।
    - हम आत्मायें सब एक बाप के बच्चे ब्रदर्स हैं।
    - आत्मा ही विचार करती है।
    - हम आत्मायें सब भाई-भाई हैं। भाई का जरूर बाप भी होगा ना।
      - वह है परमपिता परमात्मा।
    - यहाँ आत्मा पतित तमोप्रधान बनती है, फिर बाप सतोप्रधान पवित्र बनाते हैं
    - आत्मा कहती है यह मेरा शरीर है। मैं प्राइम मिनिस्टर हूँ।
      - आत्मा शरीर के साथ न हो तो बोल न सके।
  - **परमात्मा**
    - ओम् शान्ति करने वाला एक शिवबाबा है, जिसको कोई शरीर नहीं।
    - मैं एक ही बार आता हूँ, मैं सदैव देही-अभिमानी हूँ।
    - मैं पुनर्जन्म में नहीं आता इसलिए मेरी महिमा ही न्यारी है।
    - मुझे कहते हैं निराकार परमपिता परमात्मा।
    - परमपिता परमात्मा विचित्र है।
      - उनका न सूक्ष्म, न स्थूल चित्र है।
      - उनकी महिमा गाई जाती है, दुःख हर्ता, सुख कर्ता, पतित-पावन।
    - चित्र बनते हैं लेकिन वह है निराकार, वह कभी साकार बनते ही नहीं।
      - पूजा भी निराकार की ही होती है।
    - मुझे ही पतित-पावन, ज्ञान का सागर कहते हैं।
    - मुझे झाड़ के आदि-मध्य-अन्त का मालूम है।
    - शिवबाबा भी है निराकार। उनको भी बोलने के लिए कर्मेन्द्रियों का आधार लेना पड़ता है,
      - इसलिए दिखाते हैं मुख से गंगा निकली।
    - अब शिव तो है बिन्दी।
    - सर्व पतितों को पावन बनाने वाला एक सर्जन है।
  - **ओम् शान्ति**
    - ओम् शान्ति। यह किसने कहा?
      - एक शिवबाबा ने कहा, एक ब्रह्मा बाबा ने। यह बापदादा इकट्ठे हैं।
      - मैं शान्ति का सागर हूँ, पीछे किसने कहा?
    - दो बार कहते हैं ओम् शान्ति, ओम् शान्ति।
      - तो दोनों को बोलना पड़े ओम् शान्ति, ओम् शान्ति। अब पहले किसने कहा?
        - पहले शिवबाबा ने कहा ओम् शान्ति।
      - बाद में किसने कहा?
        - दादा की आत्मा ने कहा। बच्चों को याद दिलाते हैं ओम् शान्ति,
  - **Other points**
    - ब्रह्मा-विष्णु-शंकर हैं सूक्ष्मवतनवासी।
    - बाप ही इस संगमयुग पर आकर यह नॉलेज देते हैं।
    - इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ की नॉलेज कोई को है नहीं। कल्प की आयु ही बहुत बड़ी लिख दी है।

ज्ञान

- **सतयुग**
  - सतयुग में तो यह नॉलेज किसको भी रहती नहीं।
- **तुम जानते हो**
  - तुम जानते हो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी सूक्ष्म रूप है।
  - तुम जानते हो सतयुग-त्रेता में न चित्रों की भक्ति होती, न विचित्र की। बुद्धि में आता है परमपिता परमात्मा विचित्र है।
  - तुम जानते हो कि यह जो आत्माओं का झाड़ है उनके पहले जरूर बीज होता है।
    - एक दो वृद्धि को पाते-पाते झाड़ बड़ा हो जाता है।
  - तुम बच्चे जानते हो मूलवतन में सभी आत्मायें रहती हैं।
  - तुम बच्चों की बुद्धि में है बाबा इस शरीर में आया हुआ है।
  - तुम जानते हो आधाकल्प फिर हम किसको पुकारेंगे नहीं क्योंकि सुखधाम में रहेंगे।
  - तुम बच्चे जानते हो कि यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है।
- **तुमको समझाते हैं / कहते हैं**
  - तुम जानते हो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी सूक्ष्म रूप है।
  - तुम और किसी के चित्र को पतित-पावन नहीं कहेंगे।
  - बाप समझाते हैं राम कोई त्रेता वाला याद नहीं आता है।
    - राम परमपिता परमात्मा को समझ याद करते रहते हैं।
  - बाप समझाते हैं, आत्मा तो अविनाशी है। एक भी आत्मा का विनाश नहीं हो सकता।
  - बाप कहते हैं - जैसे तुम आरगन्स ले पार्ट बजाते हो वैसे ही मैं भी आरगन्स का आधार लेता हूँ। नहीं तो मैं पार्ट कैसे बजाऊं?
  - बाप कहते हैं - मैं कैसे आकर तुम बच्चों को राजयोग सिखाऊं।
    - मनुष्य से देवता बनाने के लिए राजयोग बाप ही आकर सिखाते हैं।
- **तबका**
  - पहला तबका
    - ऊंच ते ऊंच मूलवतन, उस तबके में रहने वाला है परमपिता परमात्मा।
  - फिर दूसरा तबका।
    - सेकण्ड नम्बर तबके में सूक्ष्म शरीर वाले हैं।
  - थर्ड
    - थर्ड तबके में स्थूल शरीरधारी हैं, इसमें मूँझना नहीं है।
- **डिफेंसरेंस**
  - साकारी सृष्टि में हैं साकारी बाबा। निराकारी सृष्टि में निराकार बाबा।
  - आत्मा ही अविनाशी है, देह तो विनाशी है।
  - परमात्मा का नाम है शिव। आत्मा का नाम है सालिग्राम।
  - सतयुग में तो यह नॉलेज किसको भी रहती नहीं।

    बाप ही इस संगमयुग पर आकर यह नॉलेज देते हैं।
- **नशा**
  - हम आत्मा हैं, यह नशा होना चाहिए।
  - अविनाशी चीज़ का नशा रहना चाहिए।
  - विनाशी चीज़ का थोड़ेही होना चाहिए।
  - देह के नशे वाले को देह-अभिमानी कहा जाता है।
- **English Words**
  - इनकारपोरियल वर्ल्ड।
    - वहाँ हैं आत्मायें,
  - कारपोरियल
    - यहाँ हैं जीव आत्मायें
  - सेन्सीबुल
  - ब्रदर और सिस्टर
- **सतयुग**
  - सतयुग में सब निरोगी होते हैं।
  - यह लक्ष्मी-नारायण सतयुग के मालिक हैं।
  - सतयुग में तो ऐसे नहीं कहेंगे कि कर्म ऐसे हैं। वहाँ कोई दुःख, रोग होता नहीं।
  - सतयुग में 5 तत्व भी सतोप्रधान रहते हैं।
- **हिस्ट्री-जॉग्राफी**
  - चारों युगों में हमारा पार्ट चलता है।
  - हम सूर्यवंशी फिर चन्द्रवंशी बनते हैं। चन्द्रवंशी जैसे सेकण्ड ग्रेड में आ जाते हैं।
  - -देवता सम्पूर्ण निर्विकारी, 16 कला सम्पूर्ण को कहा जाता है। राम को 14 कला सम्पन्न कहेंगे।

योग

राम परमपिता परमात्मा को समझ याद करते रहते हैं।

बाप को ही सब याद करते हैं हे पतित-पावन आओ। हमको इस दुःख से छुड़ाओ।

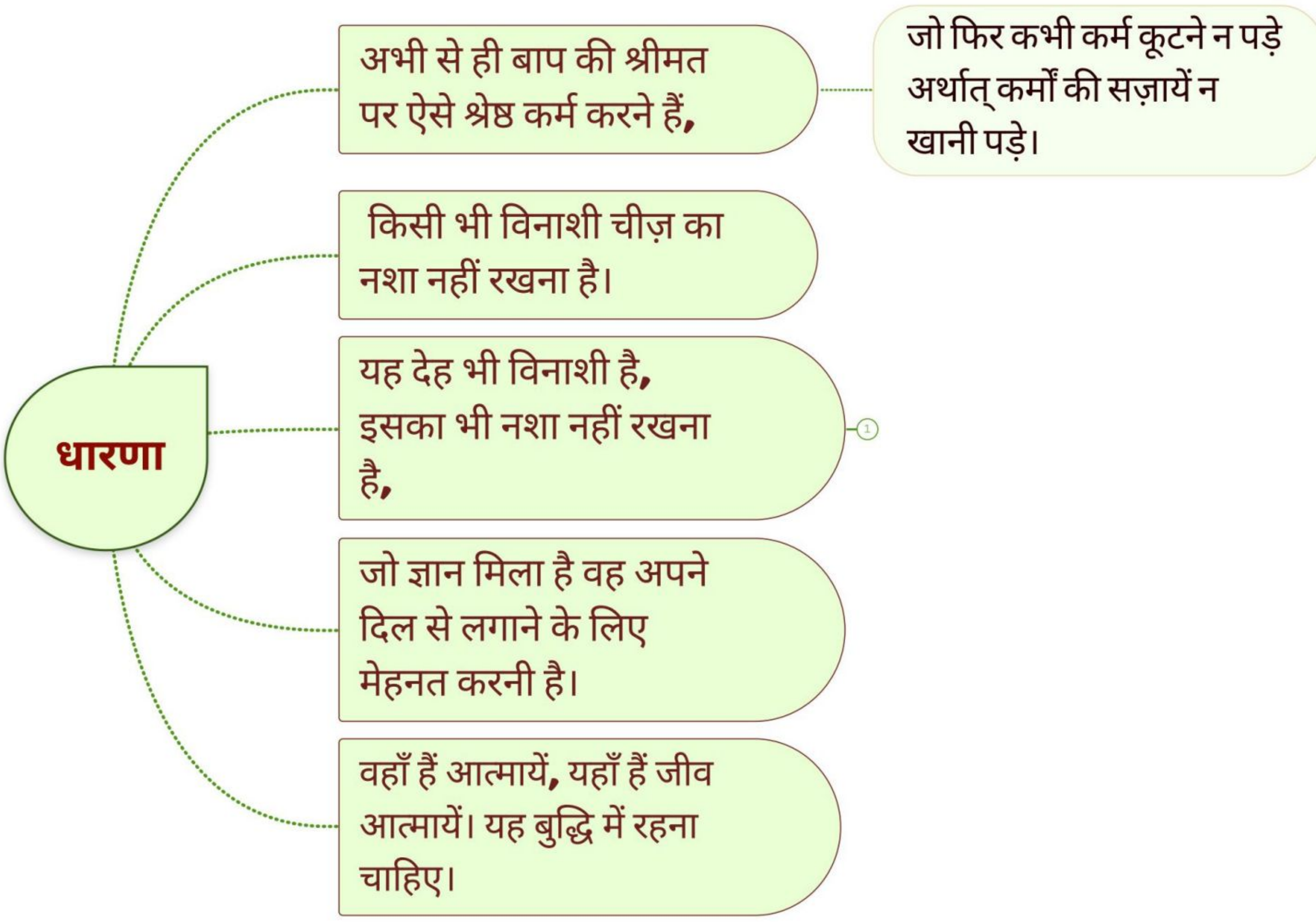
धारणा
अभी से ही बाप की श्रीमत पर ऐसे श्रेष्ठ कर्म करने हैं,
जो फिर कभी कर्म कूटने न पड़े अर्थात् कर्मों की सज़ायें न खानी पड़े।
किसी भी विनाशी चीज़ का नशा नहीं रखना है।
यह देह भी विनाशी है, इसका भी नशा नहीं रखना है,
जो ज्ञान मिला है वह अपने दिल से लगाने के लिए मेहनत करनी है।
वहाँ हैं आत्मायें, यहाँ हैं जीव आत्मायें। यह बुद्धि में रहना चाहिए।